

यशवंत गोरे

भोपाल, मध्य प्रदेश

गुब्बारों की सजावट से पर्यावरण को ख़तरा

आजकल जन्मदिन हो, शादी की सालगिरह हो, विवाह समारोह हो, किसी संस्था का कार्यक्रम हो, मतदान केंद्र हो, राष्ट्रीय पर्व का सरकारी आयोजन हो या कोई छोटा-बड़ा ख़ुशी का अवसर—हर जगह गुब्बारों से सजावट करना जैसे हमारी आदत बनती जा रही है। कुछ साल पहले तक ऐसे अवसरों पर फूलों, पत्तियों, रंगोली और पारंपरिक सजावटी सामग्री का इस्तेमाल अधिक होता था। अब उनकी जगह रंग-बिरंगे, चमकीले और अलग-अलग आकार के गुब्बारों ने ले ली है। ख़ासकर शादियों में तो मंच से लेकर प्रवेश द्वार और पूरे परिसर तक हजारों गुब्बारों से सजावट की जाती है।

कार्यक्रम के दौरान यह सजावट निश्चित रूप से सुंदर दिखाई देती है। तस्वीरें भी अच्छी आती हैं और कुछ घंटों के लिए पूरा वातावरण उत्सव जैसा लगने लगता है। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि कार्यक्रम ख़त्म होने के बाद इन गुब्बारों का क्या होता है? जिस सजावट पर हमने पैसा ख़र्च किया, वही अगले दिन कचरे के रूप में सड़क, मैदान, नाली, खेत या जलस्रोत में दिखाई देने लगती है। हमारी ख़ुशी कुछ घंटों की होती है, लेकिन उसके पीछे छोड़ा गया कचरा लंबे समय तक पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकता है।

गुब्बारे कई प्रकार के होते हैं। सामान्य लेटेक्स गुब्बारे प्राकृतिक रबर से बनाए जाते हैं, लेकिन उनमें रंग और अन्य रासायनिक पदार्थ भी मिलाए जाते हैं। दूसरी ओर माइलर या फॉयल गुब्बारे पॉलिएस्टर जैसी सिंथेटिक सामग्री और धातु की परत से बनाए जाते हैं। जन्मदिन और सालगिरह में इस्तेमाल होने वाले चमकीले, सुनहरे-चांदी के गुब्बारे, अक्षरों और अंकों वाले गुब्बारे भी इसी तरह की सजावटी सामग्री का हिस्सा हैं। हॉट एयर बैलून इनसे अलग होते हैं और गर्म हवा की मदद से उड़ने वाले वाहन हैं।

यहां मुख्य चिंता उन गुब्बारों की है जो सजावट के बाद फेंक दिए जाते हैं या हवा में छोड़ दिए जाते हैं। हवा में छोड़ा गया गुब्बारा आख़िरकार कहीं न कहीं नीचे आता ही है। उसके साथ लगी डोरी भी किसी पेड़, बिजली के तार या अन्य स्थान पर अटक सकती है। जमीन पर पड़े गुब्बारे और उनके टुकड़े पशु-पक्षियों के लिए ख़तरा बन सकते हैं।कई बार गाय, बकरी या दूसरे चरने वाले पशु कचरे के साथ गुब्बारे के टुकड़े भी निगल लेते हैं। पक्षी भी इन्हें भोजन समझकर खा सकते हैं। ऐसी सामग्री उनके पाचन तंत्र में जाकर गंभीर समस्या पैदा कर सकती है। जलस्रोतों में पहुंचने पर ये टुकड़े मछलियों और दूसरे जलीय जीवों के लिए भी ख़तरा बन सकते हैं। यानी जिस गुब्बारे को हमने कुछ समय के लिए ख़ुशी का प्रतीक माना, वह किसी बेजुबान जीव के लिए परेशानी का कारण बन सकता है।

फॉयल गुब्बारों की समस्या और गंभीर है। उनकी सिंथेटिक परत आसानी से प्राकृतिक रूप से नहीं गलती। लेटेक्स गुब्बारे भी केवल इसलिए सुरक्षित नहीं माने जा सकते कि वे प्राकृतिक रबर से बने हैं। उनके टूटने में परिस्थितियों के अनुसार काफी समय लग सकता है और वे छोटे-छोटे टुकड़ों में बदलकर कचरे की समस्या बढ़ा सकते हैं।

अब जरा अपनी परंपरा की ओर देखें। भारत में सजावट की एक समृद्ध और प्रकृति से जुड़ी परंपरा रही है। घर के दरवाजे पर आम के पत्तों का तोरण, फूलों की मालाएं, केले के पत्ते, रंगोली, मिट्टी के दीपक, कागज के झंडे और प्राकृतिक सामग्री से सजावट—ये सब हमारी संस्कृति का हिस्सा रहे हैं।

इन सजावटों में सुंदरता भी है और प्रकृति के प्रति सम्मान भी।फूल और पत्तियां कुछ समय बाद सूख जाती हैं और प्राकृतिक रूप से मिट्टी में मिल जाती हैं। कागज की सजावट का भी उचित तरीके से निपटारा किया जा सकता है।

मिट्टी के दीपक और दूसरी पारंपरिक वस्तुओं का दोबारा उपयोग संभव है। यानी हम चाहें तो खुशी और पर्यावरण—दोनों को साथ लेकर चल सकते हैं।



मुझे लगता है कि समस्या केवल गुब्बारों की नहीं, बल्कि हमारी बिना सोचे-समझे नकल करने की आदत की भी है। किसी एक समारोह में गुब्बारों से सजावट अच्छी लगी, तो दूसरे ने भी वही तरीका अपना लिया। फिर तीसरे ने, चौथे ने और देखते ही देखते वह एक नई परंपरा जैसा दिखाई देने लगा। हमने कभी यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि इसकी पर्यावरणीय कीमत क्या है।

आज शिक्षित समाज में पर्यावरण संरक्षण की बातें बहुत होती हैं। स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण दिवस मनाया जाता है, पेड़ लगाने के अभियान चलते हैं, प्लास्टिक कम करने की अपील की जाती है। लेकिन दूसरी तरफ हम अपने ही समारोहों में ऐसी वस्तुओं का इस्तेमाल करते हैं, जिनका उपयोग कुछ घंटों का है और जिनका कचरा लंबे समय तक हमारे आसपास पड़ा रहता है। क्या यह विरोधाभास हमें दिखाई नहीं देता?खुशी मनाना बिल्कुल गलत नहीं है। जन्मदिन मनाना है तो खूब मनाइए। शादी को यादगार बनाना है तो जरूर बनाइए। सालगिरह पर सजावट कीजिए और राष्ट्रीय पर्व पूरे उत्साह से मनाइए। लेकिन सजावट का तरीका ऐसा क्यों न हो, जिससे प्रकृति पर अनावश्यक बोझ न पड़े?हम फूलों, पत्तियों, रंगोली, मिट्टी के दीपकों, कपड़े की सजावट, पुनः उपयोग की जा सकने वाली वस्तुओं और स्थानीय प्राकृतिक सामग्री का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे समारोह की सुंदरता भी बनी रहेगी और कार्यक्रम के बाद कचरे की मात्रा भी कम होगी।

आज समय की मांग है कि हम 'दिखावे' से अधिक 'जिम्मेदारी' को महत्व दें। कोई सजावट कितनी महंगी है, यह महत्वपूर्ण नहीं है; वह पर्यावरण के लिए कितनी सुरक्षित है, यह अधिक महत्वपूर्ण होना चाहिए। हमें अपने बच्चों को भी यही सिखाना होगा कि खुशी का मतलब प्रकृति को नुकसान पहुंचाना नहीं है।हमने आने वाली पीढ़ियों के लिए पहले ही जमीन, पानी और हवा पर प्रदूषण का बहुत बोझ डाल दिया है। अब अपनी छोटी-सी खुशी के लिए उसमें और कचरा जोड़ना समझदारी नहीं है। हमें यह तय करना होगा कि हमारी खुशी के बाद प्रकृति को परेशानी न हो।

अगली बार जब किसी समारोह में गुब्बारों की सजावट दिखाई दे तो केवल उसकी चमक न देखें। एक पल रुककर यह भी सोचें—कार्यक्रम खत्म होने के बाद इनका क्या होगा? कौन इन्हें साफ करेगा? ये कहां जाएंगे? और अगर ये किसी पशु या पक्षी के पेट में चले गए तो क्या होगा?

सजावट कुछ घंटों की होती है, तस्वीरें कुछ वर्षों तक याद रहती हैं, लेकिन प्रकृति को पहुंचा नुकसान उससे कहीं अधिक समय तक रह सकता है।इसलिए खुशी मनाइए, उत्सव मनाइए, खूब सजाइए—लेकिन ऐसी सजावट चुनिए जिसमें इंसान की खुशी के साथ प्रकृति की मुस्कान भी शामिल हो। यही सच्ची समझदारी है और आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी।